ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

इषं स्तोतृभ्य आ भर।। सामवेद 971

हे ऐश्वर्यशाली परमात्मन्! स्तोताओं के लिए अन्न और धन प्रदान कर। O the Bounteous Lord ! Bestow all kinds of food and wealth for your divotces.

वर्ष 38, अंक 8 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 29 दिसम्बर, 2014 से रविवार 4 जनवरी, 2015
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 191 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 4
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं के सहयोग से आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में

जाति-पाति एव भेद-भाव मुक्त समाज के संकल्प के साथ

88वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न

आर्यनेता स्व. ओमप्रकाश त्यागी जी द्वारा संसद में प्रस्तुत धर्मान्तरण विरोध विधेयक आज भी प्रासंगिक

आस्था चैनल के माध्यम से देश-विदेश के लाखों आर्यजनों ने की भागीदारी

आर्यसमाज की विशाल संगठन शक्ति का परिचय दिया शोभायात्रा ने

ऊपर : शोभायात्रा का नेतृत्व। मध्य : विशाल जन सभा के मंच से स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते वैदिक विद्वान एवं संन्यासीगण। नीचे- हजारों आर्यजनों ने उपस्थित होकर दी श्रद्धांजलि। इनसेट - इस अवसर पर प्रस्तुत नाटिका के पात्रों के साथ महाशय धर्मपाल जी एवं डॉ. रामप्रकाश जी उद्बोधन देते हुए।

वेद-स्वाध्याय

बाहर से भीतर की ओर

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्।
यूपेन यूपऽआप्यते प्रणीतोऽअग्निरग्निना।।
यजुर्वेद : अध्याय १९ मन्त्र १७

अर्थ—(**वेद्या**) यज्ञवेदि से (**वेदिः**) हृदय-वेदि (**समाप्यते**) व्याप्त की जाती है। (**बर्हिषा**) कुशा के आसन से (**इन्द्रियं बर्हिः**) इन्द्रिय रूप कुश-आसन [व्याप्त किया जाता है।] (**यूपेन**) यज्ञ स्तम्भ से (**यूपः**) शरीर रूप यज्ञ स्तम्भ (**आप्यते**) व्याप्त किया जाता है। (**अग्निना**) यज्ञाग्नि से (**अग्निः**) आत्माग्नि (**प्रणीतः**) प्रज्वलित किया जाता है।

यज्ञ का अन्तिम अभिप्राय यज्ञकर्त्ता को आन्तरिक जगत् की ओर प्रवृत्त करना है। उपनिषद् में कहा है यत्+ज्ञ=यज्ञ जिससे वह परमात्मा जाना जाए उस सारी प्रक्रिया का नाम यज्ञ है। जैसे अग्निहोत्र करने के लिये सुन्दर वेदि का निर्माण कर उसे गोमय से लीपकर सजाया जाता है और चारों ओर कुशा का आसन बिछाते हैं। बड़े-बड़े यज्ञों में यज्ञ का प्रतीक यूप (स्तम्भ) गाड़ा जाता है। ऐसे अनेक यूप गाड़ उनसे यज्ञिय पशुओं को बांधते हैं और अग्नि को प्रज्वलित कर मन्त्रोच्चारण से घृत-सामग्री की आहुतियाँ देते हैं।

इसी भाँति हृदय की वेदि सजा कुशा के आसन के समान इन्द्रियों को हृदय में समाहित कर मनोकामना रूप पशु को ओंकार के यूप से बांध आध्यात्मिक अग्नि को प्रज्वलित किया जाता है।

प्राणाग्निहोत्रोपनिषद् में मानव शरीर की यज्ञ से तुलना की गई है। सूर्याग्नि की गोलाकार वेदि मानो यह शिर है। चौकोर यज्ञकुण्ड में स्थापित आहवनीयाग्नि मुख में स्थित है। अर्धचन्द्राकृति वाले यज्ञकुण्ड में स्थापित दक्षिणाग्नि हृदय में स्थापित है। यही अग्नि गार्हपत्य होकर कोष्ठाग्नि के रूप में नाभि में स्थित है।

इस आध्यात्मिक यज्ञ में आत्मा यजमान है। बुद्धि पत्नी, चित्त होता, शरीर वेदि, नासिका उत्तर वेदि, दाहिना हाथ स्रुवा ओंकार यूप, काम पशु, केश दर्भ, कर्मेन्द्रियाँ समिधा, बायाँ हाथ घी का पात्र, तन्मात्राएँ सदस्य, स्मृति, दया, शान्ति, अहिंसा पत्नी संयाजा, ज्ञानेन्द्रियाँ यज्ञ पात्र है। इस प्रकार सारे देव इस शरीर में समाहित हैं।

जैसे तीक्ष्णाग्र कुशा को यत्न से आसन में ग्रथित कर वेदि के चारों ओर बिछाते हैं वैसे ही अति चंचल इन्द्रियों को वश में कर उन्हें चित्त में समाहित किया जाता है। हृदय में परमात्मा रूप अग्नि का ध्यान कर उसे प्राणायाम से प्रज्वलित करते हैं और मन्त्र जप की आहुति देते हैं। ऐसा प्रयत्न करना चाहिये कि यज्ञ योग में बदल जाए।

ब्रह्म होता ब्रह्म यज्ञा ब्रह्मणा स्वरवो मिताः। अध्वर्युर्ब्रह्मणो जातो ब्रह्मणोऽन्तर्हितं हविः॥

ब्रह्म स्रुचो घृतवतीर्ब्रह्मणा वेदिरुद्धता। ब्रह्म यज्ञस्य तत्त्वं च ऋत्विजो ये हविष्कृतः। शमिताय स्वाहा॥ अथर्व० १९.४२.१-२

होता, यज्ञ (स्वरु) यज्ञ स्तम्भ, अध्वर्यु, हवि, घृत से भरी स्रुक्, वेदि आदि साधन ब्रह्ममय होवें। यज्ञ का तत्त्व या उद्देश्य भी ब्रह्ममय होवे। इस ब्रह्मयज्ञ को आत्मशान्ति के लिये किया जाए। इसमें हमारा सर्वस्व ब्रह्मार्पण होने से कर्तृत्व भी उसी का होगा। द्रव्य यज्ञ में '**इदन्न मम**' की भावना भी इसी ओर संकेत करती है।

गीता भी यही कहती है—

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ (गीता ४.२४)

जिस यज्ञ में अर्पण अर्थात् स्रुवा आदि भी ब्रह्म है और हवन किए जाने योग्य द्रव्य भी ब्रह्म है तथा ब्रह्मरूप कर्ता के द्वारा ब्रह्म रूप अग्नि में आहुति देना रूप क्रिया भी ब्रह्म है, उस ब्रह्म कर्म में स्थित रहने वाले योगी द्वारा प्राप्त किये जाने योग्य फल भी ब्रह्म हैं।

यज्ञ का कोई भी विशेष विधि-विज्ञान हो, किन्तु उसमें जो-जो कर्मकाण्ड है, वे ब्रह्म को अन्तिम ध्येय बना कर किए जाने चाहियें। - *क्रमशः*

शुद्धि प्राचीन आर्य विधान है

- डॉ. विवेक आर्य

'घर वापसी', शुद्धि, परावर्तन अनेक नामों से हम लोग एक प्राचीन संस्कार से आज परिचित है। प्राचीन काल में अनार्यों को आर्य बनाने की प्रक्रिया को शुद्धि कहा जाता था। इस प्रक्रिया में आत्मचरित को पवित्र करना शुद्ध कहलाता था। आज विधर्मी जैसे मुस्लिम अथवा ईसाई हो चुके हमारे भाइयों को पुन: वैदिक सनातन धर्म में प्रविष्ट करने को "शुद्ध" करना कहा जाता है। 28 दिसम्बर 2014 के मिड-डे अखबार में मुंबई के रहने वाले संस्कृत विद्वान श्री गुलाम दस्तगीर जी का बयान छपा कि हिन्दू धर्मग्रंथों में शुद्धि का विधान नहीं है। हम इस लेख के माध्यम से गुलाम साहिब जी की इस भ्रान्ति का निवारण करना चाहते हैं ि‍क शुद्धि का विधान न केवल प्राचीन हैं अपितु इसका वैदिक ग्रंथों में अनेक स्थलों पर वर्णन मिलता हैं जिससे न केवल उनकी भ्रान्ति दूर हो सके अपितु उनके निकृष्ट जन भी इस भ्रान्ति का शिकार न हो।

वेदों में शुद्धि का सन्देश

1. हे विद्वानों! जो गिरे हुए है उनको फिर से उठाओ। जिन्होंने पाप किया है अथवा जिनका जीवन मैला हो गया है उनको फिर से जीवन दो या 'शुद्ध' करो। ऋग्वेद 10/137/1

2. हे इन्द्र! शत्रुओं के निवारणार्थ हमें शक्ति दीजिये जो हिंसारहित एवं कल्याण कारक है। जिससे तुम दासों (अनार्यों) को आर्य अर्थात श्रेष्ठ बनाते हो, जो मनुष्य की वृद्धि का हेतु है। ऋग्वेद 6/22/10

3. परमेश्वर के नाम को आगे बढ़ाते हुए सब संसार को आर्य अर्थात श्रेष्ठ बनाओ। ऋग्वेद 9/63/5

श्रोत्र-सूत्र ग्रंथों में शुद्धि का विधान

1. भ्रष्ट द्विजों की संतान को शुद्ध कर यज्ञोपवीत दे देना चाहिये। (आपस्तम्भ 1/1/1)

2. प्रायश्चित से प्रायश्चित्कर्ता शुद्ध होकर अपने असली वर्ण को प्राप्त करता है। (आपस्तम्भ 1/1/2)

3. उपद्रव, व्याधि, मुसीबत आदि में शरीर की रक्षार्थ जो विधर्मी बने वह शांति होने पर शुद्ध होने के लिए प्रायश्चित कर ले। (पराशर स्मृति 7/41)

4. देश में उपद्रव आदि के काल में जिनका यज्ञोपवीत उतारा गया वह मास भर दुग्ध पान का व्रत करे, गोपालन करे और पुन: यज्ञोपवीत धारण करे। (हारीत स्मृति)

5. जिनको मलेच्छों ने बलपूर्वक गोहत्या, मांसभक्षण आदि नीचकर्म किये हो वह वर्णानुसार कृच्छ व्रत कर शुद्ध हो जाये। (देवल स्मृति श्लोक 9-11)

6. गोवध आदि समतुल्य पातकियों की शुद्धि चान्द्रायण आदि व्रतों से होती हैं। (याज्ञवल्क्य स्मृति प्र -5)

भविष्य पुराण में शुद्धि का वर्णन

1. कण्व ऋषि द्वारा मलेच्छों की शुद्धि का वर्णन। भविष्य पुराण प्रतिसर्ग खंड 4 अध्याय 21 श्लोक 17-21

2. अग्निवंश के राजाओं द्वारा बौद्धों की शुद्धि का वर्णन। (भविष्य पुराण प्रति सर्ग खंड 4/ 21/31-35)

3. कृष्ण चौतन्य के सेवक, रामानंद के शिष्य, निम्बादित्य, विष्णु स्वामी द्वारा मलेच्छों की शुद्धि का वर्णन। (भविष्य पुराण प्रतिसर्ग खंड 4/21/ 48-59)

इतिहास में शुद्धि के प्रमाण

1. कश्मीर के राजा द्वारा ब्राह्मणों के सहयोग से लिखवाया गया ग्रन्थ रणबीर सागर में शुद्धि का समर्थन इन शब्दों में किया गया है की सभी ब्राह्य जातियाँ प्रायश्चित कर शुद्ध हो सकती है। (रणबीर सागर प्रायश्चित प्र 12)

2. इतिहास में शंकराचार्य एवं कुमारिलभट्ट द्वारा बुद्धों की शुद्धि।

3. इतिहास में हुण, काम्बोज आदि जातियाँ शुद्ध होकर आर्य हुई।

4. शिवाजी द्वारा नेताजी पालकर जैसे सरदारों को इस्लाम से वैदिक धर्म में दोबारा से शुद्ध कर लिया गया।

इस प्रकार के अनेक उदहारण प्राचीन ग्रंथों एवं इतिहास से दिए जा सकते है

जिससे यह सिद्ध होता है कि प्राचीनकाल में शुद्धि का विधान हमारे देश में प्रचलित था। आधुनिक भारत में शुद्धि के प्राचीन संस्कार को पुनर्जीवित करने का और खोये हुए भाइयों को वापिस से स्वधर्मी बनाने का सबसे प्रथम एवं क्रांतिकारी प्रयास स्वामी दयानंद द्वारा किया गया जिसके लिए समस्त हिन्दू समाज को उनका आभारी होना चाहिए।

Link of News- http://www.mid-day.com/articles/conversion-has-no-basis-in-hindu-scriptures/15871196

Email : drvivek@yahoo.com

गुड़गांव में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न

धर्मान्तरण पर कानून बने - आर्य केन्द्रीय सभा, गुड़गाँव

आर्य केन्द्रीय सभा एवं आर्य समाज शिवाजी नगर गुडगाँव के संयुक्त तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द जी के 88वें बलिदान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में आर्य जगत् के विद्वानों ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के चलाये शुद्धि कार्यक्रम की चर्चा की। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के कोषाध्यक्ष कन्हैया लाल आर्य ने विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए यह प्रस्ताव रखा कि पिछले एक सप्ताह से पूरे राष्ट्र में जो एक नाटक हो रहा है, उस से पूरा राष्ट्र स्तब्ध है। कुछ तथाकथित धर्मनिरपेक्ष समर्थकों ने आगरे में हुए धर्मान्तरण पर बड़ा शोर मचाया परन्तु उस समय वे कहाँ चले जाते हैं जब ईसाई और मुसलमान विभिन्न प्रकार के प्रलोभन देकर धर्मान्तरण

करते है। तब साम्यवादी ब.स.पा., सपा तथा राष्ट्रीय जनता दल आदि के नेताओं को क्यों साँप सूंघ जाता है? परन्तु अब हम अपने भूले भटके भाइयों को घर वापसी का प्रयास करते हैं तो इन हिन्दू विरोधियों के पेट में क्यों दर्द हो जाता है? आर्य जी ने यह प्रस्ताव रखा कि धर्म परिवर्तन पर रोक लगनी चाहिये इसके लिए सरकार को कानून बनाना चाहिये।

आत्मशुद्धि आश्रम के संचालक स्वामी धर्ममुनि ने कहा कि असंख्य योनियों के पश्चात् हमें यह मानव चोला प्रदान किया है। गुड़गाँव के विधायक उमेश अग्रवाल जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के बनाये मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। गोशाला संघ हरियाणा के अध्यक्ष आचार्य योगेन्द्र आर्य एवं महामन्त्री सर्वमित्र आर्य ने गोवंश की वृद्धि एवं रक्षा के उपायों पर चर्चा की। भजनोपदेशक सन्दीप आर्य एवं उपेन्द्र आर्य जी के भजनों से जनता आनन्द विभोर हुई। शिवाजी नगर के कार्यकर्त्ताओं में कन्हैया लाल आर्य एवं महेन्द्र प्रताप आर्य को सम्मानित किया। इसके साथ कुन्दन लाल साहनी मॉडल टाऊन से एवं सुश्री चन्द्र कान्ता आर्या शिवाजी नगर को उनके विशिष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया।

- प्रभुदयाल चुटानी, मन्त्री

विद्यावाचस्पति की मानद उपाधि सम्मान से सम्मानित

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सै. 14 फरीदाबाद के संस्कृत शिक्षक तथा उपदेशक महाविद्यालय टंकारा के स्नातक श्री हरिओम शास्त्री को भारत के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ भागलपुर ने उनकी उत्कृष्ट साहित्य सेवाओं के लिए उन्हें विद्यावाचस्पति (पी. एच.डी.) की मानद उपाधि से सम्मानित किया। यह सम्मान समारोह उज्जैन में दिनांक 13 दिसम्बर, 2014 को सम्पन्न हुआ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सन्देश परिवार की ओर से श्री शास्त्री जी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

133वाँ वार्षिकोत्सव एवं चतुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज अजमेर का 133वाँ वार्षिकोत्सव 21 से 23 नवम्बर 2014 तक चार सत्रों में सम्पन्न हुआ। प्रत्येक सत्र में यज्ञ (चतुर्वेद शतकम् पारायण यज्ञ), भजनों एवं विद्वानों के प्रवचन हुए।

आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार, आर्ष गुरुकुल नोएडा, उत्तर प्रदेश के ब्रह्मत्व में वेदपाठ हेमन्त तिवारी, इन्द्रजीत आर्य, अंकुर आर्य ने किया। इस अवसर पर आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार ने यज्ञ, श्रद्धा, ओ३म् के झण्डे आदि का जीवन में महत्व बताया। सुमधुर भजन बिजनौर के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक योगेश दत्त आर्य एवं आर्य जगत् की विश्व प्रसिद्ध साध्वी डॉ. उत्तमायति तथा स्थानीय दयानन्द बाल सदन (अनाथालय) की कु० सुमित्रा आर्या, कु० नैना आर्या, कु० नेहा आर्या, ब्रह्मचारी आकाश आर्य, सुरेन्द्र कुमार आर्य, खुशवन्त सिंह आर्य, भूपेन्द्र सिंह आर्य, मुकेश सिंह आर्य ने प्रस्तुत किये।

आर्य समाज, अजमेर के प्रधान प्रो० रासासिंह, पूर्व सांसद ने आर्य समाज अजमेर के वार्षिकोत्सव में सहयोग करने सज्जनों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

- चिरंजीलाल शर्मा, मन्त्री

आर्य विद्या सभा सलखिया रायगढ़ का

वार्षिकोत्सव समारोह

2-3-4 जनवरी, 2014

समापन समारोह : 4 जनवरी, 2014
स्थान : गुरुकुल वैदिक आश्रम सलखिया
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

- त्रिनाथराम आर्य, प्राचार्य

आर्य समाज आदर्श नगर दिल्ली का

57वाँ वार्षिकोत्सव

01 से 04 जनवरी 2015 तक
समापन समारोह : 4 जनवरी 2015
प्रात: 7:30 से दोपहर 1:30 बजे

महायज्ञ पूर्णाहुति - प्रात: 7:30 बजे
ब्रह्मा : आचार्य इन्द्रदेव जी
वि. अतिथि-श्री रामकिशन सिंघल जी
भजन : श्रीमती सुदेश आर्या जी
प्रवचन : आचार्य हरि प्रसाद जी
डॉ. महेश विद्यालंकार जी
आचार्य इन्द्रदेव जी
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

- राजेश कुमार, मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का

प्रान्तीय आर्य महासम्मेन

8 फरवरी, 2014

यज्ञ : प्रात: 8-9 बजे
ब्रह्मा : श्री सत्यवीर शास्त्री जी
पाखण्ड खण्डन सम्मेलन : 9-11 बजे
अध्यक्षता : आचार्य विजयपाल जी
मु. अतिथि : श्री धर्मपाल आर्य जी
मु. वक्ता : डॉ. सुरेन्द्र कुमार, डॉ. धर्मवीर, प्रो. ओमकुमार, एवं आचार्य सोमदेव जी
भजन : आचार्य रामनिवास आर्य जी
राष्ट्ररक्षा एवं भाषा सम्मेलन -11-1 बजे
अध्यक्षता : आचार्य बलदेव जी
मु. अतिथि : श्री रामविलास शर्मा
मु.वक्ता : प्रकाश आर्य, ब्र. राजसिंह आर्य, राजेन्द्र विद्यालंकार, एवं श्री विनय आर्य
भजन : बहन अंजलि आर्या
गोरक्षा सम्मेलन - 1 से 3 बजे
अध्यक्षता : स्वामी रामदेव जी
मु. अतिथि : श्री ओमप्रकाश धनखड़ जी
मु. वक्ता : डॉ. देवव्रत आचार्य, आचार्य योगेन्द्र आर्य, आचार्य आजाद आर्य, एवं श्री कन्हैयालाल आर्य जी
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

- मा. रामपाल आर्य, मन्त्री

महिला डॉक्टर चाहिए

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली ग्रामीण क्षेत्र में संचालित दीवानचन्द स्मारक गोकुलचन्द आर्य चिकित्सालय औचन्दी, दिल्ली-110039 हेतु एक एम. बी.बी.एस. महिला डी.जी.ओ. की आवश्यकता है। उचित वेतन के साथ-साथ आवास की सुविधा प्रदान की जाएगी।
सम्पर्क करें - **श्री महेन्द्र सिंह, मन्त्री**
मो. 09999148483

शोक समाचार

श्री सोहनलाल गुप्ता को पुत्रशोक

आर्यसमाज पंचदीप मौर्य एन्कलेव के उप प्रधान श्री मनोहर लाल गुप्ता जी के भांजे एवं श्री सोहनलाल गुप्ता जी के सुपुत्र श्री प्रमोद गुप्ता जी का दिनांक 22 दिसम्बर, 2014 को 39 वर्ष की अल्पायु में हृदयाघात के कारण निधन हो गया। वे आर्यसमाज पंचदीप के सक्रिय सदस्य थे।

उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा एवं शान्तियज्ञ रविवार 4 जनवरी, 2015 को सायं 3-4 बजे सामुदायिक भवन के ब्लाक शकूरपुर, सन्देश विहार दिल्ली-34 पर आयोजित होगी।

श्री चन्द्रभान आर्य का निधन

हरियाणा के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री चन्द्रभान आर्य जी का गत दिनों जींद में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से जींद में 24 दिसम्बर, 2014 को प्रात: 11 बजे सम्पन्न हुआ।

श्री नरेश चौहान का निधन

आर्यसमाज बल्लभगढ़ के सदस्य श्री नरेश चौहान सुपुत्र श्री तेजपाल सिंह आर्य चौहान का 16 नवम्बर, 2014 को लगभग 56 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे। वे अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सुमित्रा देवी सहित एक पुत्र, एक पुत्री छोड़ गए हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 29 दिसम्बर से रविवार 4 जनवरी, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 1/2 जनवरी, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 31 दिसम्बर, 2014

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में
प्रबंधन संकाय द्वारा भाषण प्रतियोगिता

''योग्यता एवं योग्य प्रशासन एक साथ चलते हैं। यदि हम सुशासन चाहते हैं तो हमें अपने अंदर तो योग्यता पैदा करनी ही होगी साथ हमारा शासन करने वालों को भी योग्य ही चुनना होगा।'' गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रबंधन संकाय द्वारा ''सुशासन के लिए टैक्नोलोजी का प्रयोग'' विषय पर आयोजित भाषण प्रतियोगिता में कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि आधुनिक तकनीक का प्रयोग करके ही हम आज के दौर में आगे बढ़ सकते हैं अन्यथा हम पिछड़ जाएंगे आधुनिक तकनीक का प्रयोग शिक्षा के क्षेत्र में, कृषि के क्षेत्र में भी आवश्यक है। व्यापार आदि में तो आवश्यक है ही। आज तकनीक के प्रयोग में भारत भी किसी से पिछड़ा नहीं है। सुशासन तभी आएगा जब हर हाथ को काम और विकास हमारे गांवों तक पहुंचेगा। प्रतियोगिता में अधिकांश प्रतिभागियों के भी विचार यही थे।

पुरस्कार राशि प्रथम–15000/–, द्वितीय 10,000/–, तृतीय 5000/– ।

प्रथम पुरस्कार –विश्वविद्यालय स्तर पर गुरुकुल के प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति के छात्र गौरव सिंह को मिला द्वितीय रोहित मराठा एम.बी.ए. तथा विश्व जीत सिंह बी.ए. दोनों को मिला तथा तृतीय पुरस्कार रजत कुमार बी.टैक को मिला।

स्कूल स्तर पर प्रथम पुरस्कार नैनीका बब्बर डी.पी.एस., द्वितीय पुरस्कार उत्सव वर्मा डी.पी.एस., तृतीय पुरस्कार तृप्ति साहू डी.पी.एस. ने प्राप्त किया।

निर्णायक मंडल में डॉ. ओ.पी. सिंह तथा आशिमा शर्मा थे।

कार्यक्रम का संचालन संचित डागर ने किया। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ विनोद शर्मा, डॉ. वी.के.सिंह, डॉ. एस. पी.सिंह, डॉ. प्रदीप कुमार जोशी तथा अन्य संस्थानों के प्राध्यापक छात्र आदि उपस्थित थे।

– *जनसंपर्क अधिकारी*

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001

आवश्यकता है

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की शिरोमणि नियन्त्रक संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा निम्न लिखित पदों के लिए आवेदन आमन्त्रित करती है–

1. **हिन्दी टाईपिस्ट/अशुलिपिक :** जो हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी में भी कार्य कर सकें तथा डी.टी.पी. का भी ज्ञान हो।
2. **एकाउंटेंट :** पूर्ण अनुभवी हों।
3. **ड्राइवर :** कमर्शियल लाइसेंस एवं बैज वालों को वरीयता। सभी पदों के लिए अनुभवी योग्य उम्मीदवारों की आवश्यकता है। योग्यता के अनुसार वेतन सहित अन्य सुविधाएं दी जाएंगी। गुरुकुलीय पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों को वरीयता दी जाएगी। इच्छुक उम्मीदवार अपना बायोडाटा भेजें।

Email:aryasabha@yahoo.com

श्री अर्जुनदेव चड्ढा सम्मानित

कोटा क्षेत्र में समर्पित भाव से व निष्ठापूर्वक किए जा रहे विभिन्न समाज सेवा कार्यों के लिए आर्य समाज के जिला प्रधान एवं पंजाबी जनसेवा समिति के अध्यक्ष अर्जुनदेव चड्ढा को एक भव्य कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पुलिस महानिरीक्षक डॉ. रवि प्रकाश मेहरड़ा द्वारा शॉल ओढ़ाकर सम्मान पत्र व स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। दादा नारायण दास मदनानी सेवा संस्थान के सेवा संस्थान के अध्यक्ष डा. टी.सी. मेहता ने कहा कि इस संसार में मानव सेवा से बड़ा कोई पुण्य नहीं है। इस सर्वश्रेष्ठ कार्य को करने में माननीय अर्जुन देव चड्ढा कोटा शहर में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं।

–मन्त्री

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टेलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह